औचित्यपूर्णता (वैधता) की अवधारणा (The concept of Legitimacy)

औचित्यपूर्णता की धारणा अत्यन्त प्राचीन है, लेकिन वर्तमान समय और सन्दर्भों में इसने नवीन अर्थ प्राप्त कर लिए हैं। सभ्यता और संस्कृति तथा राजनीतिक विकास के साथ-साथ मानवीय जीवन और व्यवहार में दमनात्मक शक्ति सम्बन्धों की भूमिका कम होती जा रही है और शक्ति के अदमनात्मक तत्वों जैसे प्रभाव, सत्ता और नेतृत्व की भूमिका निरन्तर बढ़ती जा रही है। शक्ति के दमनात्मक और अदमनात्मक दोनों ही श्रेणी के तत्वों पर यह बात समान रूप से लागू होती है जब वे वैधता या औचित्यपूर्णता के साथ जुड़ जाते हैं तो उनकी शक्ति और प्रभाव बहुत बढ़ जाता है, लेकिन जब उन्हें औचित्यपूर्णता की स्थिति प्राप्त नहीं होती अथवा जब उनकी औचित्यपूर्णता पर सन्देह उत्पन्न हो जाता है, तब मानवीय व्यवहार को प्रभावित करने के सम्बन्ध में उनकी सीमाएं बहुत अधिक बढ़ जाती हैं, शक्ति प्रभाव और सत्ता-औचित्यता की स्थिति प्राप्त करके ही प्रभावशाली और दूसरों के व्यवहार को परिवर्तित करने में सफल होते हैं। डहल के अनुसार, राजनेतागण अपने कार्यों को औचित्यपूर्णता प्रदान करने का निरन्तर प्रयास करते हैं, वे अपने प्रभाव को औचित्यपूर्णता के वस्त्र पहनाते हैं और ऐसा हो जाने पर ही उसे सत्ता की स्थिति प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में, प्रभाव को सत्ता के रूप में स्थापित करने का कार्य औचित्यपूर्णता के आधार पर ही सम्भव होता है।

यह तथ्य इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि मैक्स वेबर ने केवल औचित्यपूर्ण सरकारों और सत्ताओं का ही विश्लेषण करना अपना मूल विषय माना है। सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं की प्रभावशीलता औचित्यपूर्णता पर

Avinash

Scanned with CamScanner

निर्भर करती है, लेकिन लोकतन्त्रीय व्यवस्था में औचित्य-पूर्णता का महत्व सर्वाधिक है। लोकतन्त्र जनसहमति पर आधारित शासन होता है अतः लोकतन्त्र में भय और आतंक के आधार पर जनता से आज्ञापालन करा पाना बहुत अधिक कठिन हो जाता है, इसलिए लोकतन्त्रीय व्यवस्था को औचित्यपूर्णता की सर्वाधिक आवश्यकता पड़ती है। बल, दमन, आदि का प्रयोग बहुत कम मात्रा में होना चाहिए, इनका अधिक प्रयोग किये जाने पर सत्ता अपनी औचित्यपूर्णता खो बैठती है जो कालान्तर में समस्त राजनीतिक व्यवस्था के लिए घातक स्थिति होती है। व्यक्ति और सत्ता के बीच अच्छे सम्बन्धों की स्थापना के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि सत्ता के द्वारा अधिक से अधिक सम्भव सीमा तक औचित्यपूर्णता की स्थिति प्राप्त की जाए। अतः राजनीतिक व्यवस्थाएं सदैव और सर्वत्र औचित्यपूर्णता की तलाश में रहती हैं। एस. एम. लिपसेट का कथन है कि "किसी विशिष्ट लोकतन्त्र की स्थिरता न केवल आर्थिक विकास पर है, अपितु वहां की राजनीतिक व्यवस्था की वैधता और क्षमता पर भी निर्भर करती है।

Avinash